डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

प्रस्तावित शोध कार्य की रूपरेखा

‘‘सर्वोदय की दार्शनिक अवधारणाः समकालीन भारतीय परिप्रेक्ष्य में’’

o"kZ 2009

¼MkW- ,- ih- nqcs½
funsZ'kd
izksQslj ,oa v/;{k
n'kZu foHkkx
MkW- gjhflag xkSj fo-fo-]lkxj

¼pUæ'ks[kj ukenso½
'kks/k Nk=
n'kZu foHkkx
MkW- gjhflag xkSj fo-fo-]lkxj

सर्वोदय की दार्शनिक अवधारणा : समकालीन भारतीय परिप्रेक्ष्य में

शोध का उद्देश्य :-

सर्वोदय की दार्शनिक अवधारणा में ''सर्वभूतहितेरता'' की भारतीय कल्पना, सुकरात की ''सत्य की साधना, रस्किन की ''अंत्योदय'' की अवधारणा और महात्मा गांधी के द्वारा सम्पूर्ण मानव जाति की ''सर्वोदय'' की अवधारणा शामिल है । प्राचीन संस्कृत साहित्य में सर्वोदय शब्द नहीं मिलता, किन्तु विक्रम की सातवीं शताब्दी के जैन दार्शनिक समन्तभद्र ने 'युक्त्याशासन' की इक्सठवीं कारिका में 'तीर्थमिंदतवैव' का वर्णन कर भगवान महावीर को ही सर्वोदय तीर्थ माना है । आज सर्वोदय एक समर्थ जीवन दर्शन ही नहीं अपितु ज्ञान, तत्त्व, आचार और सौन्दर्य से परिपूर्ण एक समग्र दर्शन है ।

सर्वोदय शब्द के मुख्य रूप से दो अर्थ हैं ।

(1) सब का उदय और

(2) सभी का सब प्रकार का उदय

पहले सर्वोदय का अर्थ 'अभ्युदय' था बाद में गांधी जी के द्वारा इसे संशोधित करके 'सर्वोदय' शब्द कहा गया । सर्वोदय शब्द जो कि अन्त्योदय का हिन्दी अनुवाद है इसे गांधी जी ने पाश्चात्य दार्शनिक रस्किन की पुस्तक 'अन्टू दिस लास्ट' पुस्तक का अध्ययन करने पर गांधी जी पर बड़ा ही प्रभावी प्रभाव पड़ा और उन सिद्धांतों को समझा और जीवन के अंत तक उन सिद्धांतों पर चलते रहे ।

सर्वोदय की दार्शनिक अवधारणा का उद्देश्य एक ऐसे कल्याणकारी समाज की कल्पना करना है जिसमें एक निम्न कोटि के भी मनुष्य का सम्पूर्ण उदय हो । सभी को समान अधिकार प्राप्त हों, सभी का कल्याण हो, छूत-अछूत का भेद समाप्त हो, अर्थात सम्पूर्ण संसार का उदय और सभी को कल्याणकारी स्थान की प्राप्ति हो । सर्वोदय के सिद्धांत से सभी मनुष्यों के दैहिक, शारीरिक और आध्यात्मिक उन्नति का बोध होगा ।

सर्वोदय का सरल अर्थ :-

सर्वोदय एक ऐसा शब्द है जिसका जितना अधिक चिंतन और प्रयोग करते जायेगें उसकी चिंतन और प्रयोग की सीमा भी अनंत होती जायेगी ।

ईश्वर ने मनुष्य और संसार की रचना की है । मनुष्य से मनुष्य में विरोध हो , यह ईश्वर ने कभी नहीं चाहा । विचारों में मतभेद हो सकते हैं, भिन्न–भिन्न विचारों को मिलाकर ही एक पूर्ण विचार की रचना होती है । एक मनुष्य को किसी विचार का एक हिस्सा सूझेगा, दूसरे मनुष्य को दूसरा, तीसरे को तीसरा हिस्सा सूझेगा । तब एक पूर्ण विचार का निर्माण होगा । विचारों में भेद होना संभव है लेकिन हित विरोध नहीं होना चाहिये ।

सर्वोदय की सरल और स्पष्ट परिभाषा है कि इस शब्द का हम जैसे–जैसे चिंतन और प्रयोग करते जायेगें वैसे–वैसे ही इसके चिंतन और प्रयोग की सीमा भी अनंत होती जायेगी लेकिन कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक स्पष्ट अर्थ है कि हमें पराई (दूसरों) कमाई नहीं खाना चाहिये । यदि हम दूसरों का धन ले लेते है तो इसे अपनी कमाई नहीं कहेंगे अपनी कमाई का अर्थ "प्रत्यक्ष पैदाइश" ये नियम यदि हम धारण या ग्रहण करें तो समाज और दुनियॉ में सर्वोदय की अवधारणा का प्रचार प्रसार हो सकेगा ।

शोध की उपादेयता :–

वर्तमान में सर्वोदय की अवधारणा और उसकी व्यवहारिकता पर विचार किया जा सकता है । सर्वोदय की अवधारणा से व्यक्ति, समाज, मानवता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता पर क्या प्रभाव पड़ा है । सम्पूर्ण मानव जाति का सर्वांगीण विकास समाज में सर्वोदय के सिद्धांत से उसके मूल्य और महत्व को समझकर ही सही उत्तर दिया जा सकता है । व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है समाज के बिना व्यक्ति और समाज की कल्पना नहीं की जा सकती । व्यक्ति अपना स्वतंत्र महत्व रखते हुए विभिन्न शक्तियों तथा वातावरण से प्रभावित होता है ।

व्यक्तिगत महत्व :–

जीवनमात्र में सुख की कामना और उन्नति करना ही जीवन का उद्देश्य है व्यक्ति ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से सुख को सामाजिक सुख से अलग नहीं कर सकता है । मनुष्य और समाज का इतना गहरा संबंध है कि वह स्वार्थ और परस्वार्थ की अवहेलना नहीं कर सकता है, यही सुख की भावना और विकास की पृष्ठभूमि है जो 'सर्वोदय की अवधारणा का सिद्धांत' है ।

भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धांतों में 'सर्वभूतहितेरता' 'वसुधेवकुटुम्बकम्' 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' 'सर्वे सर्व भूतेषु' श्लोकों से सर्वोदय की अवधारणा का ज्ञान होता है । उपनिषद्, वेदांत, गीता में भी एकत्व दिखाई देता है । महात्मा बुद्ध की बोधिसत्व और बुद्ध की वाड्मय में भी झलक देखने को मिलती और साथ ही साथ हजारों वर्ष पहले जैनाचार्य समन्तभद्र के द्वारा 'सर्वोदय' तीर्थ का प्रयोग किया गया है ।

सर्वोदय की अवधारणा का उद्देश्य सबका उदय और सबका कल्याण करना है । यह अर्थ पहले भी था, अब भी है और कल भी रहेगा । सर्वोदय एक पूर्ण शास्त्र के रूप में राजनीति, शिक्षा नीति, धर्मदर्शन में भी शामिल होकर सिद्धांतों और विचारों में आस्था और आध्यात्मिक भाई–चारा स्थापित करता
है ।

सामाजिक महत्व :–

सर्वोदय के सिद्धांत के माध्यम से सम्पूर्ण मानव जाति के आंतरिक शुद्धीकरण, चरित्र शुद्धि एवं कर्म शुद्धि के द्वारा मनुष्य के उत्थान और कल्याण का संदेश दिया है ।

संगठन से ही समाज का निर्माण होता है । सर्वोदय का सिद्धांत सभी सामाजिक संस्थाओं पर अपना प्रभाव डालता है और इस सिद्धांत के अनुसार आचरण करें तो सभी प्रकार के क्रोध, घृणा, स्वार्थपरता आदि दुर्भावनाओं का अंत हो जाता है तथा पारिवारिक और सामाजिक संघर्ष नष्ट हो जायेंगे एवं जीवन सुख और शांति से व्यतीत होने लगेगा ।

सर्वोदय के सिद्धांत के माध्यम से मनुष्य का मनुष्य से प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, विश्वास आदि सद्गुणों का उदय मन, वचन और कर्म से सफलतापूर्वक एवं सत्यतापूर्वक आचरण करने पर सभी प्रकार के प्रपंचों और छलपूर्ण भावनाओं का अंत होगा और समाज और मानव जाति में संतोष और सुरक्षा की भावना उत्पन्न होगी ।

विषय वस्तु :–

सर्वोदय की अवधारणा में एक ऐसे कल्याणकारी समाज की कल्पना की गई है जिसमें सम्पूर्ण मानव जाति का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण हो और सभी का सर्वांगीण विकास हो ।

(क) ज्ञान मीमांसा :–

सर्वोदय वह धर्म है जिसमें सभी विषमताओं को समान करके विश्व का विकास करना ही उसकी वैचारिक साधना है ।

(ख) तत्त्व मीमांसा :–

अनेक दृष्टि से अनेकांतात्मक सत्य का निर्देश हो सकता है किन्तु अनेकांत दृष्टि व्यवहार की दृष्टि है । सर्वोदय का सिद्धांत सामान्य और शाश्वत है । सृष्टि के अंदर नैतिक व्यवस्था में सर्वोदय सिद्धांत पर अखंड विश्वास है ।

(1) ईश्वर मीमांसा :–

ईश्वर का साक्षात्कार ही जीवनमात्र का उद्देश्य है । ईश्वर अनिवर्चनीय, अवर्णनीय, अद्‌भुत, सर्वव्यापी सत्ता है जिसका रूप मन और वाणी से परे है विश्व की सुव्यवस्था, विश्व का मूल कारण, विश्व की मूल सत्ता धार्मिक रहस्यानुभूति एवं जीवन के लिए पूर्व कल्पना की अनंत उपयोगिता के रूप में उसे सिद्ध करने का प्रयास कर सकते हैं । सर्वोदय को सत्य, सत् अस्तित्व भी कह सकते हैं ।

(2) सृष्टि मीमांसा :–

सत्यमेव ईश्वरः वस्तुतः उपनिषद् के सर्वेखलुइदं ब्रह्म की ध्वनि देता है जगत के नाम रूप वाली वस्तुओं को ईश्वर की अभिव्यक्ति माना है । ईश्वर आनंद की प्रतिमूर्ति है । जगत के कण–कण में आनंद व्याप्त है सम्पूर्ण विश्व के पीछे विश्व व्यवस्था का विधान है ।

(3) आत्म मीमांसा :–

सम्पूर्ण सत्य का साक्षात्कार असंभव है अतः साधन केवल अपने जीवन में ही सत्य का अविश्रांत अन्वेषण करता हुआ पूरे ब्रह्मांड को न्याय से सत्यशोधन करता है जिस प्रकार ईश्वर की सत्ता स्वयंसिद्ध है उसी प्रकार

आत्मा का अस्तित्व अखंडित और अखंडनीय है । उपनिषद् में आत्मा को सर्वः माना है । इस तरह से मैं सब में हूँ और सब मुझमें हैं । सत्य रूप परमेश्वर हम सभी में विद्यमान है ।

आचार मीमांसा :–

आचार मानव का वास्तविक आधार है व्यक्ति का विकास समाज का श्रेय, सार्वजनिक कल्याण सर्वोदय के सिद्धांत से हीं संभव है । मनुष्य स्वयं सिद्ध और नीतिवान है ईश्वर का साक्षात्कार ही मनुष्य के लिए सर्वोपरि है जिसके लिए प्रेम अति आवश्यक है ।

1. साध्य :–

व्यक्ति का श्रेय संसार के श्रेय में निहित है भौतिक वातावरण अच्छा होने पर सफलता प्राप्त होगी और यदि संस्कृति का स्तर गिरा होगा तो हम भी गिरेंगे इसलिए साध्य के सम्पर्क में ही हमारा चरित्र बनता और बिगड़ता है अतः व्यक्ति का कल्याण ही सर्वोदय का कल्याण है और सर्वोदय का कल्याण हीं संसार का कल्याण है ।

2. साधन :–

''साधनाना अनेकता'' यदि साधनों को औचित्य सिद्धि पर निर्भर माने और जो साधन हाथ लगे वही ठीक विशुद्ध अवसरवाद है साध्यानुकूल साधन का नाम साधन शुद्धि है सिद्धि के लिए कोशिश जहॉ से आरंभ होती है वह विचार साधन की परिणिति है वह उसका साध्य है इस तरह साधन शुद्धि का विचार सर्वोदय विचार के तंत्र के साथ–साथ क्रांति के साधन में भी क्रांति है ।

सर्वोदय के सिद्धांत में इनके अतिरिक्त और भी कई ऐसे दर्शनों का महायोगदान है जिनके कारण सर्वोदय की अवधारणा को और भी अधिक विकसित बनाया जा सकता है । इन सिद्धांतों से समस्त मानव जाति एवं मानवीय गुणों का उत्थान संभव है वे इस प्रकार हैं ।

1. इतिहास दर्शन
2. राजदर्शन
3. अर्थदर्शन
4. शिक्षा दर्शन

5. समाज दर्शन
6. दंड शास्त्र
7. आरोग्य शास्त्र
8. सौन्दर्य शास्त्र

सर्वोदय के सिद्धांत में विश्व के समस्त प्राणी जगत को संदेश के द्वारा यह बतलाने का प्रयास किया गया है कि मनुष्य का जन्म हजारों जन्मों के बाद प्राप्त होता है । मनुष्य रूपी देह अत्यंत दुर्लभ है । यह बहुत ही पुण्य कर्मो से प्राप्त होती है क्योंकि केवल मनुष्य में ही अद्भुत शक्तियों को प्रदान किया जाता है, जैसे बोलने की शक्ति, पाप और पुण्य को समझने की शक्ति ये विलक्षण शक्तियां अन्य किसी भी जीव जन्तु को प्राप्त नहीं होती है । मानव जीवन में ही सभी प्रकार के सत्कर्मो को करने का अवसर प्राप्त होता है । पाप कर्म भोगने के लिए जानवर (जीवजन्तु) पशु का जन्म होता है और मनुष्य का जन्म पुरूषार्थ संचय करने के लिए होता है । देवता भी मनुष्य योनि में जन्म लेने की कामना करते हैं क्योंकि मनुष्य योनि में ही सभी प्रकार के सत्कर्मो, सतगुणों एवं शुभकर्मो को करने का अवसर प्राप्त होता है ।

भगवत्गीता में भी कहा गया है कि तुम एक दूसरे से प्रेम, एक दूसरे की मदद करो, परस्पर सहयोग से ही तुम्हारा और सभी का कल्याण होगा दूसरे के जीवन की रक्षा करो क्योंकि मानव जीवन अमूल्य है कब समाप्त हो जाये ज्ञात नहीं । जीवन एक परीक्षा के समान है इसलिए जीवन में ही सभी प्रकार के सत्कर्मो, सत्गुणों और शुभकर्मो के द्वारा ही अपने जीवन में ही सम्पूर्ण पुरूषार्थों को प्राप्त करना है जिसमें सभी प्रकार के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सत्कर्मो को मन, वचन और कर्म से जीवन में धारण करके पूर्ण जीवन के रूप में सफल बनाया जा सके ।

सर्वोदय की अवधारणा से समाज को लाभ के उद्देश्य से इस सिद्धांत में यह कहा गयाहै कि मनुष्य की योनि ही सर्वश्रेष्ठ योनि है इसलिए इसमें सभी प्रकार के जीव–जन्तुओं एवं मनुष्य के साथ प्रेम, दया, करूणा आदि सभी प्रकार के सद्गुणों का जीवन में सदा ही अनुशरण (पालन) करना चाहिये तभी सर्वोदय की अवधारणा एक पूर्ण अवधारणा के रूप में सम्पूर्ण होगी ।

आज वर्तमान में जो समस्यायें विद्यमान हैं यह पूर्व के समय भी विद्यमान थीं अंतर मात्र इतना है कि उस समय में ये समस्यायें कम और छोटी

थीं । वर्तमान में ये समस्यायें अति विकराल रूप में हमारे समक्ष उपस्थित हैं । इन्हीं समस्याओं के अंत के उद्देश्य से सर्वोदय की अवधारणा के सिद्धांत को स्थापित किया (अपनाया) और इसी सिद्धांत के अंदर मानव जीवन की सभी प्रकार की समस्याओं को स्पष्ट रूप से और उनको हल करने का प्रयास इस सिद्धांत में किया है । क्योंकि केवल 'सर्वोदय' का सिद्धांत ही सभी समस्याओं को हल करने का एकमात्र उपाय है । वे समस्यायें इस प्रकार हैं ।

1. गरीबी की समस्या
2. बेरोजगारी की समस्या
3. भ्रष्टाचार की समस्या
4. आतंकवाद की समस्या
5. छुआछूत की समस्या
6. कालाबाजारी की समस्या
7. नशाबंदी की समस्या

इन सभी समस्याओं को समाप्त करने के लिये सरल और सीधा साधन 'सर्वोदय की अवधारणा' का सिद्धांत है इस सिद्धांत के द्वारा सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान संभव है और एक ऐसे कल्याणकारी समाज का निर्माण संभव होगा जिसमें सभी का सम्पूर्ण और सर्वांगीण विकास हो सकेगा । अर्थात् मानव जाति में 'सबका' और 'सब प्रकार' का उदय होगा । यह सर्वोदय की अवधारणा का सिद्धांत जीवन में समस्त मानव जाति के लिए एक महत्वपूर्ण और कल्याणकारी सिद्धांत साबित होगा ।

सर्वोदय की दार्शनिक अवधारणा

यह शोध कार्य निम्नलिखित पांच अध्यायों में पूर्ण होगा ।

अध्याय – 1

भूमिका

संक्षित परिचय – सर्वोदय का अर्थ, इतिहास एवं अवधारणा –

अध्याय – 2

भारतीय परिवेश में सर्वोदय की अवधारणा –

1. वैदिक काल में सर्वोदय की तत्तव
2. महाकाव्यों में सर्वोदय के तत्तव
1. जैन और बौद्ध दर्शन में

अध्याय – 3

पाश्चात्य परिवेश में सर्वोदय की अवधारणा –

बैंथम, मिल, सिजविक, मार्क्स की समाजविहीन राज्य की अवधारणा

अध्याय – 4

समकालीन चिंतन में सर्वोदय –

1. विवेकानंद
2. रविन्द्रनाथ टेगौर
3. गांधी जी
4. विनोबा भावे
5. जयप्रकाश नारायण
6. राम मनोहर लोहिया
7. दीनदयाल उपाध्याय
8. जवाहरलाल नेहरू

अध्याय – 5

उपसंहार

उद्देश्य

उपादेयता

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मूल ग्रंथ
2. संदर्भ ग्रंथ
3. सहायक ग्रंथ
4. शोध पत्र पत्रिकायें

<u>जॉन स्टूअर्ट मिल</u> –

1. व्यक्ति स्वातंत्र्य का पुजारी (जीवन और चिंतन)
   हिन्दी पॉकेट बुक्स प्रा.लि. जी.टी.रोड, शाहदरा, दिल्ली.
2. आगस्त काम्ट एण्ड पौजीटिविज्म, 1866 सम्पादन जेम्स गिन एनालिसिस
   ऑफ दी फेनोमीना ऑफ दी ह्यूमन माईन्ड 1869.

<u>सिजविक हेनरी</u> –

1. मेथर्ड ऑफ ऐथिक्स, मेकमिलन लंदन 1930.
2. फिलासफी ऑफ केन्ट एण्ड अदर लेक्चर्स एण्ड एसेज 1905.

<u>कार्ल मार्क्स</u> –

1. धर्मनीति, सस्ता साहित्य मंडल नई दिल्ली 1950.
2. हिन्द स्वराज, सस्ता साहित्य मंडल नई दिल्ली 1970.

<u>जैरेमी बैंथम</u> –

1. ऐन इन्ट्रोडक्शन टू दा प्रिन्सीपल्स ऑफ मारल्स लेजिस्टेशन
   न्यूयार्क हाफनर 1948.
2. नीतिशास्त्र के मूल सिद्धांत, अनुवादक वेद प्रकाश वर्मा
   अलाईड पब्लिशर्स प्रा. लि. नई दिल्ली 1984.

<u>स्वामी विवेकानंद</u> –

1. वेदांत, रामकृष्ण मठ नागपुर 1990.
2. राजयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, रामकृष्ण मठ धन्तोरी नागपुर.

<u>रविन्द्रनाथ टैगोर</u> –

1. जीवन स्मृति, हिन्दी पॉकेट बुक्स 1990.
2. श्रद्धांजलि, श्री अरविन्द आश्रम पांडिचेरी 1954.

<u>जैन दर्शन</u> –

1. जैन दर्शन मोहनलाल मेहता, श्री सन्मति ज्ञानपीठ लोहा मंडी आगरा.

बौद्ध दर्शन –

1. बौद्धधर्म दर्शन, आचार्य नरेन्द्र देव, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना 1956.

विनोबा भावे –

1. जीवन और शिक्षण, सस्ता साहित्य मंडल नई दिल्ली 1954.
2. विनोबा चिंतन, सर्वसेवा संघ प्रकाशन वाराणसी 1968.

राममनोहर लोहिया –

1. भाषा, नवहिन्द प्रकाशन हैदराबाद 1965.
2. इतिहास चक्र, लहर प्रकाशन इलाहाबाद 1973.

जयप्रकाश नारायण –

1. भारतीय न्याय प्रवेशिका, प्रयाग गर्ग प्रेस इलाहाबाद.
2. समाजबाद सर्वोदय और लोकतंत्र, पटना बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी 1973.

जवाहरलाल नेंहरू –

1. दिव्य पुरूष नेहरू, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 1966.
2. भारत एक खोज, प्रथम संस्करण 1946 लेखक जवाहरलाल नेहरू मेरीडियन बुक्स लि. 8 गैरिज स्ट्रीठ लंदन.

पं. दीनदयाल उपाध्याय –

1. एकात्म मानववाद, जाग्रति प्रकाशन नौएडा 1986.
2. पोलिटिकल डायरी (हिन्दी) जैको बम्बई 1968.

गांधी जी –

1. सर्वोदय (अन्टु दिस लास्ट का सार), सस्ता साहित्य मंडल नई दिल्ली 1950.
2. गीता हृदय, सस्ता साहित्य मंडल नई दिल्ली 1951.

अन्य सहायक ग्रन्थ –

बसंत कुमार लाल –

1. समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल वनारसीदास पब्लिकेशन 41UA बंगलो रोड जवाहर नगर नई दिल्ली.
2. डॉ. राधाकृष्ण
   भारतीय दर्शन, भाग 1 और भाग 2, राजपाल एण्ड संस मोतीलाल वनारसी दास पब्लिकेशन नईदिल्ली.

<u>सर्वोदय सिद्धान्त पर सन्दर्भ ग्रन्थ सूची</u>

''<u>सर्वोदय की अवधारणा</u>'' के सिद्धान्त पर उसी के अनुरूप ही कुछ और सन्दर्भ ग्रन्थों को लिखा गया है इन ग्रन्थों का विवरण निम्न प्रकार से है :–

(1)	मोहनदास करमचन्द गांधी	–	<u>सर्वोदय</u> (रस्किन के अन–टू–दिस लास्ट का सार)
(2)	गोपीनाथ धावन	–	सर्वोदय तत्त्व दर्शन,
(3)	विनोबा साहित्य	–	सर्वोदय सेवकों के सम्मेलन में कार्यकत्ताओं को दिये महत्वपूर्ण भाषण
(4)	सर्वोदय का घोषणा पत्र	–	चांडिल <u>सर्वोदय</u> सम्मेलन में दिये विनोबा जी के महत्वपूर्ण भाषण
(5)	देवशंकर राव	–	<u>सर्वोदय</u> का इतिहास और शास्त्र
(6)	नारायण जयप्रकाश	–	समाजवाद <u>सर्वोदय</u> और लोकतंत्र
(7)	विनोबा जी	–	<u>सर्वोदय–विचार</u> और स्वराज शास्त्र
(8)	रामकृष्ण शर्मा, वीरेन्द्र शर्मा	–	<u>सर्वोदय</u> काशी
(9)	वी.टी. रणदिवे	–	<u>सर्वोदय</u>ः एक मूल्यांकन
(10)	दादा धर्माधिकारी	–	<u>सर्वोदय</u> दर्शन
(11)	शंकरराव देव	–	<u>सर्वोदय</u> का इतिहास और शास्त्र
(12)	देसाई महादेव	–	सर्वोदय तत्व दर्शन
(13)	केला, भगवानदास	–	राज्य व्यवस्था : सर्वोदय की दृष्टि से

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)